PHARMA HERALD BULLETIN
PHARMACY PROFESSIONALS

PILES

Volume 8, Feb 2025

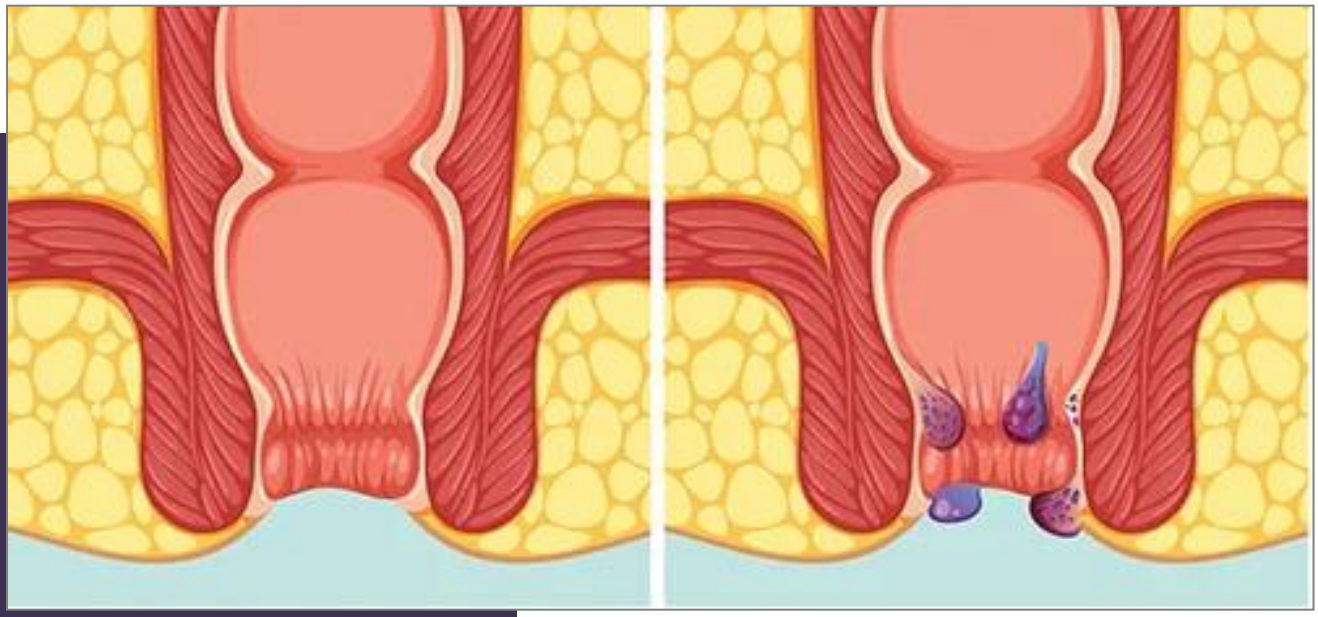

Dr. A. K. Gupta

अर्श, बबासीर (Piles)

बवासीर, **पाइल्स** या (*Hemorrhoid*) **मूलव्याधि** एक भयानक रोग है। बवासीर 2 प्रकार की होती है। आम भाषा में इसको खूनी और बादी बवासीर के नाम से जाना जाता है। कहीं पर इसे **महेशी** के नाम से जाना जाता है।

रोग परिचय- इसमें गुदाद्वार पर मस्से फूल जाते हैं मलद्वार की नसें फूल जाने से वहाँ की त्वचा कठोर (सख्त) सी हो जाती है और अंगूर की भांति एक दूसरे से जुड़े हुए मस्सों के गुच्छे से उभर आते हैं। इनमें रक्त बहता है तब खूनी बवासीर कहलाती है। इसमें अत्यन्त तीव्र जलन व पीड़ा होती है रोगी का उठना- बैठना मुश्किल हो जाता है ।

1. **खूनी बवासीर**: खूनी बवासीर में किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती है केवल खून आता है। पहले पखाने में लगके, फिर टपक के, फिर पिचकारी की तरह से सिर्फ खून आने लगता है। इसके अन्दर मस्सा होता है। जो कि अन्दर की तरफ होता है फिर बाद में बाहर आने लगता है। टट्टी के बाद अपने से अन्दर चला जाता है। पुराना होने पर बाहर आने पर हाथ से दबाने पर ही अन्दर जाता है। आखिरी स्टेज में हाथ से दबाने पर भी अन्दर नहीं जाता है।

2. **बादी बवासीर**: बादी बवासीर रहने पर पेट खराब रहता है। कब्ज बना रहता है। गैस बनती है। बवासीर की वजह से पेट बराबर खराब रहता है। न कि पेट गड़बड़ की वजह से बवासीर होती है। इसमें जलन, दर्द, खुजली, शरीर में बेचैनी, काम में मन न लगना इत्यादि। टट्टी कड़ी होने पर इसमें खून भी आ सकता है। इसमें मस्सा अन्दर होता है। मस्सा अन्दर होने की वजह से पखाने का रास्ता छोटा पड़ता है और चुनन फट जाती है और वहाँ घाव हो जाता है उसे डाक्टर अपनी भाषा में फिशर भी कहते हें। जिससे असहाय जलन और पीड़ा होती है। बवासीर बहुत पुराना होने पर भगन्दर हो जाता है। जिसे अँग्रेजी में फिस्टुला कहते हें। फिस्टुला प्रकार का होता है। भगन्दर में पखाने के रास्ते के बगल से एक छेद हो जाता है जो पखाने की नली में चला जाता है। और फोड़े की शक्ल में फटता, बहता और सूखता रहता है। कुछ दिन बाद इसी रास्ते से पखाना भी आने लगता है। बवासीर, भगन्दर की आखिरी स्टेज होने पर यह केंसर का रूप ले लेता है। जिसको रिक्टम कैंसर कहते हें। जो कि जानलेवा साबित होता है।

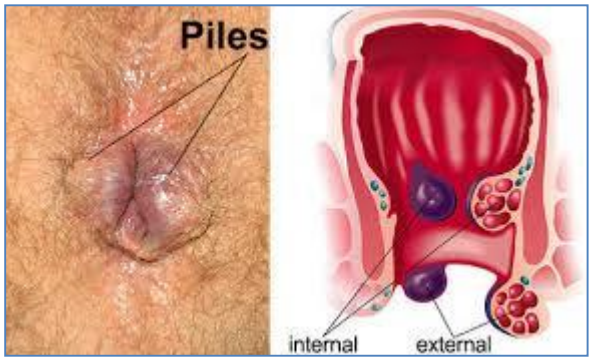

कारण

कुछ व्यक्तियों में यह रोग पीढ़ी दर पीढ़ी पाया जाता है। अतः अनुवांशिकता इस रोग का एक कारण हो सकता है। जिन व्यक्तियों को अपने रोजगार की वजह से घंटों खड़े रहना पड़ता हो, जैसे बस कंडक्टर, ट्रॉफिक पुलिस, पोस्टमैन या जिन्हें भारी वजन उठाने पड़ते हों,- जैसे कुली, मजदूर, भारोत्तलक वगैरह, उनमें इस बीमारी से पीड़ित होने की संभावना अधिक होती है। कब्ज भी बवासीर को जन्म देती है, कब्ज की वजह से मल सूखा और कठोर हो जाता है जिसकी वजह से उसका निकास आसानी से नहीं हो पाता मलत्याग के वक्त रोगी को

काफी वक्त तक पखाने में उकडू बैठे रहना पड़ता है, जिससे रक्त वाहनियों पर जोर पड़ता है और वह फूलकर लटक जाती हैं। बवासीर गुदा के कैंसर की वजह से या मूत्र मार्ग में रूकावट की वजह से या गर्भावस्था में भी हो सकता है।

चिह्न व लक्षण

वाह्य बवासीर जैसा कि मानव गुदा के आसपास दिखता है

वाह्य तथा आंतरिक बवासीर भिन्न-भिन्न रूप में उपस्थित हो सकता है; हालांकि बहुत से लोगों में इन दोनो का संयोजन भी हो सकता है। रक्ताल्पता पैदा करने के लिए अत्यधिक रक्त-स्राव बेहद कम होती है, और जीवन के संकट पैदा करने वाले रक्तस्राव के मामले तो और भी कम हैं। इस समस्या का सामना करने वाले बहुत से लोगों को लज्जा आती है और मामला उन्नत होने पर ही वे चिकित्सीय लेने जाते हैं।

- गुदा के आस-पास कठोर गांठ जैसी महसूस होती है। इसमें दर्द रहता है, तथा खून भी आ सकता है।
- शौच के बाद भी पेट साफ ना हेने का आभास होना।
- शौच के वक्त जलन के साथ लाल चमकदार खून का आना।
- शौच के वक्त अत्यधिक पीड़ा होना।
- गुदा के आस-पास खुजली, एवं लालीपन, व सूजन रहना।
- शौच के वक्त म्यूकस का आना।
- बार-बार मल त्यागने की इच्छा होना, लेकिन त्यागते समय मल न निकलना।

सावधानियाँ

- बवासीर के रोगी को बादी और तले हुये पदार्थ नही खाने चाहिये, जिनसे पेट में कब्ज की संभावना हो
- हरी सब्जियों का ज्यादा प्रयोग करना चाहिये,
- पाइल्स से छुटकारा पाने के लिए आप उच्च फाइबर वाले फलों का सेवन कर सकते हैं। फाइबर की मात्रा बढ़ाने के लिए आप फलों के छिलके का भी सेवन कर सकते हैं। जैसे चीकू, नाशपाती और सेब को छिलके सहित खाना,
- साबुत अनाज और चोकर फाइबर के अच्छे स्रोत हैं, जो पाइल्स से राहत दिलाने में फायदेमंद होते हैं। साबुत अनाज में शामिल हैं- गेहूं का चोकर, भूरा चावल (ब्राउन राइस), ओट्स, राई, जौ आदि,
- ईसबगोल फाइबर से भरपूर होता है। इसे खाने से कब्ज की शिकायत नहीं होती है। रोजाना एक गिलास गुनगुने पानी में 1 से 2 चम्मच ईसबगोल मिलाकर सेवन करने से बवासीर में आराम मिलता है,

उपचार

1. एक गिलास गर्म पानी में आधा नीबू निचोड़कर उसमें शीरा 2 छोटे चम्मच डालकर खूब घोटकर सेवन करना लाभप्रद है।

2. नागकेशर तथा खून खराबा दोनों को सम मात्रा में पीसकर तथा कपड़े से छानकर 1-2 माशा की मात्रा में ताजा पानी से दिन में 3-4 बार प्रयोग करायें। बबासीर का रक्त शर्तिया रुक जाता है। यही औषधि यदि हरे धनिये के रस या अनार के मीठे रस से सेवन कराई जाये तो अत्यन्त ही प्रभावशाली हो जाती है।

3. रोठे का छिलका जलाया हुआ तथा सफेद कत्था 1-1 तोला को मिलाकर पीसकर चूर्ण बनाकर सुरक्षित रख लें। इस योग को 3-3 माशा की मात्रा में सुबह शाम मक्खन या मलाई के साथ सेवन कराना खूनी बबासीर में लाभप्रद है।

4. भाँग के पत्ते, बिनौले के बीजों की गिरी, रसौद (प्रत्येक 3 माशा) लेकर गुलाब के अर्क में पीसकर मस्सों पर लगाना अतीव गुणकारी है।

5. रीठे का छिलका जलाया हुआ, बकायन के बीजो की गिरी, सफेद कत्था प्रत्येक 1 तोला, लौह भस्म 6 माशा, सभी को मैदा की भांति सूक्ष्म पीसकर 1 माशा की मात्रा में 1 छटांक मक्खन में मिलाकर सुबह शाम सेवन करायें। बबासीर का अत्यन्त सफल योग है। बबासीर का रक्त शीघ्रता से बन्द हो जाता है।

6. हरड़ पीसकर और कपड़े से छानकर पानी में लेप बनाकर (एक ग्राम लेप में) 2 रत्ती अफीम तथा चौथाई गुनी वैसलीन मिलाकर मरहम् बना लें। इसको मस्सों व गुदा के अन्दर लगाने से दर्द, जलन, खुजली व रक्त आने को आराम आ जाता है। हरड़ का चूर्ण फाँकना भी लाभप्रद है ।

7. नीबू का रस निकालकर साफ कपड़े से छानकर बराबर मात्रा में मूंगफली का तेल भली प्रकार फेंट कर ड्रापर या ग्लीसरीन सिरिन्ज से 2-3 छोटे चम्मच भर रात को सोते समय एक सप्ताह निरन्तर गुदा में डालना (प्रवेश कराना) बबासीर में अत्यन्त ही गुणकारी है । इसी प्रकार आलिव आयल (जैतून का तैल) 1 औस की मात्रा में एनीमा की भाँति गुदा में प्रवेश कराना लाभप्रद है। जैतून का तैल उपलब्ध न होने पर मूंगफली का तेल का भी प्रयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार शार्क लीवर आयल या काडलीवर आयल (मछली का तैल) प्रयोग करना भी गुणकारी है। इसी प्रकार ग्लीसरीन में ठण्डा पानी भरकर (4-5 औस की मात्रा में) दिन में 2-4 बार प्रयोग कराना लाभकारी है। विटामिन 'ई' ऐलोपैथी दवा ईवियोग या विटियोलीन कैपसूल को ब्लेड से काटकर इसका तेल मस्सों पर मलने से सूजन, जलन कब्ज दूर हो जाते हैं तथा निरन्तर प्रयोग से मस्से सूख जाते हैं।

8. बबासीर के मस्से सूज जाने, उनमें दर्द होने तथा खुजली होने पर उबलते पानी में साफ कपड़ा डुबोकर व निचोड़कर मोटी गद्दी लेटने (लेट जाने) से तुरन्त कष्ट कम हो जाते हैं। इसी प्रकार उबलते पानी के बरतन में थोड़ा सप् सतासीन का तेल डालकर बेंत वाली कुर्सी पर बैठकर (कपड़े निकालकर नंगा होकर बैठे) तथा कुर्सी के चारों ओर मोटा कपड़ा या कम्बल लपेट कर 'भाप' से मस्सों पर सिंकाई करना अत्यन्त ही लाभप्रद है।

9. किसी बरतन में पानी भरकर उसमें चुम्बक डालकर रात भर पड़ा रहने दें, दिन को चुम्बक निकाल लें। इसे 1-2 औंस यह ताजे पानी में मिलाकर दिन में 3-4 बार पिलाना भी बबासीर में लाभप्रद है। इसी प्रकार तिलों के तेल में 2-3 दिन तक चुम्बक (मेग्नेट) डुबोकर रख देने से उसमें भी चुम्बक की शक्ति आ जाती है। यह तैल बबासीर के मस्सों, जोड़ों के दर्द व सूजन तथा हर प्रकार के दर्दों में (मालिश करना उपयोगी) है।

10. जब भी पेशाब (मूत्र) करने जायें अपना मूत्र अन्जुलि में भरकर बबासीर के मस्सों को घो लिया करें। दो माह के निरन्तर इस प्रयोग से बबासीर की हमेशा के लिए विदाई हो जायेगी ।

11. कुचला को मिट्टी के तेल में घिसकर मस्सों पर लगाने से मस्से सूख जाते हैं।

12. पीली राल 50 ग्राम लेकर बारीक पीस लें। इसे प्रतिदिन 6 ग्राम की मात्रा में 125 ग्राम दही में मिलाकर सेवन करना खूनी बबासीर का अचूक इलाज है । एक सप्ताह सेवन करें । मात्र 2-3 दिन में रक्त आना बंद होता है।

13. नाग केशर और मिश्री दोनों सममात्रा में लेकर सूक्ष्म पीसकर चूर्ण बनाकर रखें। इसकी 6 ग्राम की मात्रा को

125 ग्राम दही में मिलाकर सेवन कराने से सभी प्रकार की अर्श (बवासीर) में लाभ होता है।

14. अमरबेल का स्वरस 50 ग्राम में काली मिर्च (5 नग) का चूर्ण मिला कर खूब घोटकर नित्य प्रातःकाल सेवन कराने से खूनी बादी दोनों ही प्रकार की बवासीर में 3 दिन में ही लाभ होता है।

15. कनूर का महीन नृर्ण 8 घाम की मात्रा में नित्य सुबह शाम जल के साथ सेवन कराने से मात्र 14 दिन में ही बवासीर में लाभ होता है ।

16. नीम के बीज की गिरी का तेल 2 से 5 बूंद शक्कर के साथ खाने या कैपसूल में भरकर निगलने से (थोड़े दिनों में ही) खूनी या बादी दोनों ही प्रकार की बवासीर में लाभ हो जाता है।

17. चार-पाँच मूली के कन्द में से ऊपर का सफेद रेशा तथा पत्तों को अलग करके शेष कन्द को कूटकर रस निकाल लें। फिर इस रस को 6 ग्राम की मात्रा में लेकर घी मिलाकर नित्य प्रातः काल सेवन कराने से रक्तार्श दूर हो जाता है तथा शुष्कार्श में भी लाभ होता है ।

18. कमल केशर 3 ग्राम, नागकेशर 3 ग्राम, शहद 3 ग्राम तथा मक्खन 6 ग्राम सभी को मिलाकर प्रतिदिन सेवन करना रक्तज बवासीर में लाभप्रद है ।

19. करेलों का अथवा करेले के पत्तो का रस 20 ग्राम में 10 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रतिदिन सबेरे 7 दिन पीने से रक्तज अर्श ठीक हो जाता है।

20. प्याज के महीन-महीन टुकड़े करके धूप में सुखा लें। सूखे टुकड़ों में से 10 ग्राम प्याज लेकर घी में तलकर बाद में एक ग्राम तेल और 20 ग्राम मिश्री मिलाकर नित्य सवेरे सेवन करना अर्श में लाभप्रद है।

21. ग्वार के पत्तों का अर्क प्रातः सायं 25-25 मिली (गर्मी में मिश्री के अनुपान से, बरसात में काली मिर्च से तथा जाड़ों में फीका) पीने से खूनी बादी दोनों ही प्रकार के बवासीर में लाभ होता है।

22. काले तिल लें। उन्हें धोकर छाया में आधे रूप से सुखाले (फरहरे करें) तदुपरान्त तवे पर भी डालकर (धीमी अग्नि से भूनकर) उतारलें। फिर उन्हें ठन्डे कर समभाग बुरा मिलाकर 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह शाम सेवन कराने से रक्तार्श में विशेष लाभ होता है।

23. डेढ़-दो कागज़ी नींबू अनिमा के साधन से गुदा में लें। दस-पन्द्रह संकोचन करके थोड़ी देर लेते रहें, बाद में शौच जायें। यह प्रयोग 4- 5 दिन में एक बार करें। 3 बार के प्रयोग से ही बवासीर में लाभ होता है। साथ में हरड या बाल हरड का नित्य सेवन करने और अर्श (बवासीर) पर अरंडी का तेल लगाने से लाभ मिलता है।

24. नीम का तेल मस्सों पर लगाने से और 4- 5 बूँद रोज़ पीने से लाभ होता है।

25• करीब दो लीटर छाछ (मट्ठा) लेकर उसमे 50 ग्राम पिसा हुआ जीरा और थोडा नमक मिला दें। जब भी प्यास लगे तब पानी की जगह पर यह छास पी लें। पूरे दिन पानी की जगह यह छाछ (मट्ठा) ही पियें। चार दिन तक यह प्रयोग करें, मस्से ठीक हो जायेंगे।

26• अगर आप कड़े या अनियमित रूप से मल का त्याग कर रहे हैं, तो आपको इसबगोल भूसी का प्रयोग करने से लाभ मिलेगा। आप लेक्टूलोज़ जैसी सौम्य रेचक औषधि का भी प्रयोग कर सकते हैं।

27• आराम पहुंचानेवाली क्रीम, मरहम, वगैरह का प्रयोग आपको पीड़ा और खुजली से आराम दिला सकते हैं।

28• ऐसे भी कुछ उपचार हैं जिनमे शल्य चिकित्सा की और अस्पताल में भी रहने की ज़रुरत नहीं पड़ती। बवासीर के उपचार के लिये अन्य आयुर्वेदिक औषधियां हैं: अर्शकुमार रस, तीक्ष्णमुख रस, अष्टांग रस, नित्योदित

रस, रस गुटिका, बोलबद्ध रस, पंचानन वटी, बाहुशाल गुड़, बवासीर मलहम वगैरह।

29. अर्शरोग पर शास्त्रोक्त औषधियाँ - सूरन मोदक, जमीकंद आठ तोले, चित्रक चार तोले, सोंठ दो तोले, काली मिर्च एक तोला, शुद्ध भिलावा, पिपलामूल, वायविडंग, पीपल, तालीसपत्र प्रत्येक दो-दो तोले, त्रिफला ६ तोले, विधारा ८ तोले, काली मुसली ४ तोले और दालचीनी एवं छोटी इलायची एक-एक तोले । इन चौदह औषधियों का बारीक चूर्ण तैयार कर ९० तोले पुराने गुड़ में मिलाकर एक-एक माशे की गोलियाँ तैयार कर लेवें। इस दवा से खूनी बौर बादी दोनों बवासीर नष्ट हो जाती हैं। अर्शकुठार रस और अभयारिष्ट से भी आशातीत फल होता है।

30. बवासीर का मलहम - मारफीन सल्फेट आठ ग्रेन, एसिड टैनिक दस ग्रेन, कार्बोलिक एसिड बारह ग्रेन, बिस्मथ नाइट्रेट २० ग्रेन और **वैसलीन** एक औंस सबको एकत्र कर बवासीर पर लगाने से लाभ होता है। इस दवा को बवासीर के अलावा भगन्दर रोग में भी उपयोगी बतलाया गया है लेकिन डॉ० रामकृष्ण बर्मा जी ने बवासीर के लिए उपयोगी बतलाया है।

31. अशो बटी

योग - चिनक (जीते) की जड़, शुद्ध सुहागा, हल्दी और गुढ़ प्रत्येक एक-एक तोला ।

बनाने की विधि - चित्रक (चीता) की जड़ का चूर्ण, शुद्ध सुहागा और हल्दी का चूर्ण, इन्हे पहले गुड के साथ मिलाकर घोटें । जब सब एकदिल हो जाय, तव जरा जरा पानी का छीटा दे-देकर बहेडे के बरावर गोली वना ले ।

गुण - इस औषधि के लगाने से बवासीर के मस्से सूख जाते है ।

व्यवहार विधि - जो मनुष्य प्रतिसारणोय क्षार बादि तीक्ष्ण औषधि के प्रयोग से घबराते हो, उन्हें यह औषधि व्यवहार करनी चाहिए । इस औषधि से कष्ट नहीं होता । जिन्हें बवासीर के मस्से हो, वे इस औषधि को पानी मे घिसकर रात्रि को सोते समय मस्से पर लेप करें और जिन्हे बडे-बडे मस्ते हो और शोच के समय बाहर निकलते हो, वे शोच जाते समय इस औषधि को पानी में घिसकर एक पत्ते पर ले जाया करें।

बवासीर नाशक प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग

पाइलैक्स (हिमालय) 2-3 गोली दिन में 3 बार 1 सप्ताह तक तत्पश्चात् 2-2 गोली दिन में 2 बार लगातार 4-6 सप्ताह तक बबासीर में शर्तिया लाभकारी है । इसका मलहम भी आता है- जो अत्यन्त लाभप्रद है।

अर्कोनेट साधारण तथा फोर्ट टिकिया (चरक) दो गोली दिन में 3 बार जल के जल रक्तस्राव को बन्द करती है तथा जलन शान्त करती है। इसका भी मरहम आता है।

अभयासिन टेबलेट (झन्डू) 2-4 गोली गरम जल से दिन में 3 बार दें।

अर्शोहर टेबलेट (राजवैद्य शीतल प्रसाद) 2-3 गोली दिन में 3 बार दें। खूनी बादी दोनों ही प्रकार की बवासीर में लाभप्रद है।

अर्शान्तक कैपसूल (गर्ग वनौषधि) 1-2 कैपसूल दिन में 3 बार अर्श की सभी अवस्थाओं में निश्चत स्थाई लाभ होता है। लगातार लें ।

सैनीलाइन सीरप (डाबर) 2-2 चम्मच दिन में 3 बार यह रक्तार्श की उत्तम औषधि है। पीने के अतिरिक्त 60 बंद दवा को 10 ग्राम ठण्डे जल में घोलकर पिचकारी से प्रतिदिन दिन में 2 बार गुदा मार्ग में प्रविष्ट करान्स अत्यन्त लाभप्रद है।

अर्शान्तक वटी (धन्वन्तरि कार्यालय) 1-2 गोली सुबह-शाम जल से दें। अर्श की सभी अवस्थाओं में लाभप्रद है।

पाइल्स क्योर कैपसूल (अतुल फार्मेसी विजयगढ़, अलीगढ़) 1-1 कैपसूले प्रातःसाय जल से दें। रक्तार्श तथा वातार्श दोनों में लाभप्रद है। इसका मरहम भी आता है।

रक्तार्शारि टेबलेट (प्रताप फार्मा०) रक्तार्श में लाभप्रद है। 1-1 गोली दिन में 3 बार दे।

अर्शान्तक कैपसूल (ज्वाला) सभी अवस्थाओं में सेवनीय है। 1-2 कैपसूल 3 बार दें।

रहस्यमी आयुर्वेदिक उपचार

1. प्रसिद्ध बवासीर विशेषज्ञका रहस्योद्घाटन एक बार मेरे परम मित्र ह० एम० ए० फर्स्टक्लास मैजिस्ट्रेट ने अपने पत्रमें लिखा था कि हमारे क्षेत्र में एक नाई अर्श चिकित्सा का विशेषज्ञ है, किन्तु वह अपना योग किसी को नहीं बताता । उसकी दी हुई गोली घिस- कर मस्सों पर लगाने से रोगी स्वस्थ हो जाते हैं ।

एक बार उसके बीमार पड़ने पर मैंने एक व्यक्ति को उसके पास विशेषरूप से भेजा कि अन्त समय वह अपना योगतो बतादे, ताकि दुखी जनता का कल्याण हो। चूकि वह जीवन से निराश हो चुका था, अतः बात उसकी समझ में आगई। वही योग पाठकों को भेंट कर रहा हूँ।

योग-रसोंत व सुहागा बराबर २ लेकर रीठा के रस में गोलियां बनालें और घिसकर मस्सों पर लगाया करें।

उस नाई ने बताया कि यही योग वह जीवनभर लोगों को देता रहा और उन्हें पूर्ण लाभ होता रहा । यद्यपि साधारण सा योग है, यथापि आजतक मैंने किसी को नहीं बताया । हालांकि अनेक व्यक्ति जानने को उत्सुक रहे । (अनुभूत योग पार्ट -२)

2. एक अनुभवी वयोवृद्ध चिकित्सक से प्राप्त बवासीर की अपूर्व चिकित्सा। हकीम साहब को यह योग एक वयोवृद्ध चिकित्सक 'से प्राप्त हुआ था । वड़ा ही लाभकारी योग है। एक योग तो खाद्य औपधि का है, दूसरा लगाने वाली दवा का । दोनों ही नीचे लिखे जाते हैं।

योग- यशद, वंग, नाग तीनों १-१ तोला लेकर लोहे की कड़ाही में डाल कर गलावें । यदि शुद्ध करके डालें तो और भी उत्तम हो, फिर पीपल की अंगूठे जितनी मोटी हरी लकड़ी लेकर उसमें चलाते रहें । और साथ ही शोरे की चुटकी भी देते जांय । यहां तक कि ५ तोला शोरा भस्म हो जाय । फिर नीचे प्रचण्ड अग्नि जलाकर २ घंटे में श्वेत फूली हुई भस्म तैयार प्राप्त करलें । यदि आंच में कमी रही तो दवा का रंग खाकी होगा और वह तनिक भी लाभप्रद न होगी । जितनी ही तेज आंच होर्ग उतनी ही उत्तम श्वेत वर्ण भस्म बनेगी ।

सेवन विधि- ४ रत्ती औषधि मक्खन में रखकर खिलाएं और आधा घंटे पश्चात् निम्न वर्णित फांट की ३-४ घूंट पिलादें । बीच में और कोई वस्तु न खिलाएं पिलाएं ।

फांट की निर्माण विधि-- मलमल के एक कपड़े पर हंसराज ६ साशा रखकर उस पर पिसा हुआ वंशलो- चन ३ साशा और उस पर शुद्ध रसौंत ३ मा० की गोली रख कर ढीली सी पोटली बाँध कर रात को पानी में लटका दें और प्रातःकाल उसका स्वरस लेकर दवा खिलाने के आधा घन्टे पश्चात् पिलाएं। हर तीन दिन पश्चात् पोटली बदल दें और पानी उतना ही बनाएं, जिसके ३-४ घूंट हो सकें । लगाने वाली दवा का योग यह है।

3. यह योग उन्हीं वृद्ध महाशय का है। जव बवासीर का रक्त किसी प्रकार भी रुकने में न आता हो तो ईश्वर कृपा से निम्नांकित योग से केवल ३ दिन में निश्चय ही रुक जाता है।

योग- कलमी शोरा, कच्ची फिटकरी, शुद्ध रसौंत, बराबर २ लेकर जल की सहायता से जंगली वेर के समान 'गोलियां बनालें और एक २ गोली प्रातः सायं ताजा जल के साथ सेवन करें । रक्तार्श के लिए अक्सीर सिद्ध होगी ।

4. अपूर्व चमत्कारी बटी (ह० शेर मुहम्मद साहब, वंकाला द्वारा प्रदत्त)

खूनी या बादी कैसी भी बवासीर क्यों न हो, इस योग से निश्चय ही मिट जाती है। मस्सों का जोर तो गिनती के दिनों में ही टूट जाता है और फिर कुछ और दिनों में ही रोग नितांत मिट जाता है।

योग - निस्व बीज, बकायने के बीज, समुद्र शोप, प्रत्येक २ तो०, गुग्गुल ५ तो०, शुद्ध रसोत ५ तो०, अंजबार की जड़ जरशक रीठे का पोस्त, नरकचूर, पीतहई की छाल, प्रत्येक ५ तोला ।

निर्माण विधि- सबको कुचल कर किसी कलईदार पात्र में १॥ सेर पानी में भिगो दें। और २ दिन भीगने के पश्चात् चूल्हे पर चढ़ाकर पकायें। जब कई उबाल आ- चुकें, तो मलकर छानलें और उसमें निम्न औपधियां पीसकर मिलादें । चूना संगमर्मर ५ तो०, काला नमक ६ माशा, सांभर नमक ६ मा०, जहर मोहरा ५ तो०, श्वेत मिर्च १ तोला । इन्हें मिलाकर पुनः आग पर चढ़ाएं। जब गाढ़ा हो जाय, तो जंगली वेर के बराबर गोलियां बनालें । यदि द्रव्य अधिक गाढ़ा हो जाने से गोलियां न बन सकें, तो थोड़ा सा घृत कुमारी का अर्क मिलाकर गोलियां बनालें ।

सेवन विधि- १-१ गोली प्रातः मध्याह्न, और सायंकाल गुलाब जल के साथ दें। हर प्रकार के बवासीर को मिटाने की चमत्कारी गोलियां हैं।

5. अर्शनाशक सप्तवटी (श्री रामलाल जौहर एम.ए.एम.एस. शाहपुर द्वारा प्रेपित)

यह वह योग है, जिसके केवल ७ दिन के सेवन से हर प्रकार का अर्श निश्चय ही मिट जाता है। उक्त संज्जन लिखते हैं कि दिल तो नहीं चाहता था कि अपना अद्वितीय योग इस निर्दयता के साथ प्रकट करदू, क्योंकि यह योग मैंने बड़े परिश्रम के साथ प्राप्त कर पाया था, किन्तु आपकी सेवा से विमुख भी नहीं होना चाहता, अस्तु योग सेवार्पित है। केवल सात दिन में ही यह अर्श को निमूल कर देता है। योग को साधारण न समझें ।

योग- गेंदे के पुष्प १ तोला, शुद्ध रसौंत १ तो०, मुनक्का बीज रहित ८ माशा । सवको एकत्र करके बारीक पीसकर १-१ माशा की गालियां बनालें ।

सेवन विधि- १ गोली नित्य प्रातः जल के साथ निगल जायें।

6. रसायन तैल (ह० ईसा खां पठान, अहमदाबाद द्वारा प्रेपित)

यह योग असंख्य रोगियों पर परीक्षा करके पूर्ण सफल पाया गया है। कुछ दिनों में ही मस्सों को नष्ट करके आजन्म फिर नहीं उगने देता । विशेषता यह कि रोगी को तनिक भी कष्ट नहीं होता ।

योग- यथावश्यक कुचला लेकर पातालयन्त्र से तेल खींचलें, और शीशी में सुरक्षित रखें । शौच से निवृत्त होकर नित्य रुई की फुरेरी से मस्सों पर लगाया करें ।

7. एक चमत्कारी अर्श मलहम

योग- यशद भस्म, नौशादर देशी दोनों सम भाग ।

निर्माण विधि- नौशादर को बारीक पीसलें । और एक कड़छी में यशद भस्म बिछाकर उस पर नौशादर विछादें फिर यशद भस्म चिछाकर पुनः नौशादर बिछाएं।

इसी प्रकार सारा द्रव्य उस कड़छी में बिछाकर उसे कोयलों की तेज आंच पर रखें। पहिले किनारों से पकने लगेगा और रंग काला होता जायेगा। हां बीच में सफेद रहेगा। उसको लकड़ी से मिलादें । जच काले पानी की शक्ल में हो जाय, तो नीचे उतार कर थोड़ा सा पानी मिला दें ताकि मलहम बन जाय। फिर एक दो उबाल देलें । काथ ठीक न बने, तो घोंट कर ठीक करलें और सुरक्षित रखें । यह मलहम प्रतिदिन मस्सों पर लगाएं। एक हफ्ते में ही मस्से नितान्त नष्ट हो जायेंगे ।

Dr. A. K. Gupta (Principal)
(M. Pharm, PDCR, PGDMM & Ph.D)
GATE Exam 2003 Qualified with 97.2 Percentile
Editor- in- Chief (Pharma Herald Bulletin)

HEAD OFFICE

PHB Education

ADDRESS: -

Office -1, 3/299, Moh. Ramshala, Gaushala Road Shamli

DISTRICT SHAMLI, UTTAR PRADESH – 247776

MOBILE NO. +91-9719638415

E-MAIL: phbeducation2020@gmail.com

https://www.phbeducation.com